सहज शिक्षा कार्यक्रम में महिला शिक्षक

❑ प्रेमनारायण गुर्जर

राजस्थान में महिला शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंतनीय है । शिक्षाकर्मी परियोजना के अन्तर्गत महिला शिक्षा को प्रोन्नत करने के लिए सुदूर अंचलों में कई अभिनव प्रयोग किये गये । इस समय प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण में संलग्न लोकजुम्बिश परियोजना महिला शिक्षा पर विशेष प्रयत्न कर रही है । इस समस्या का एक सामान्य पक्ष तो यही है कि बालिकाएं शिक्षा की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाती । लेकिन समस्या का एक गंभीर पक्ष महिला-शिक्षकों का अभाव भी है । शिक्षाकर्मी परियोजना में कम पढ़ी-लिखी महिलाओं को सघन प्रशिक्षण द्वारा शिक्षाकर्मी बनाने का कार्यक्रम चलाया गया । लोकजुम्बिश परियोजना द्वारा इसी तरह के एक प्रयास का यहां परिचय दिया जा रहा है । इस संक्षिप्त रपट से इस प्रयास की चुनौतियों और संभावनाओं की झलक मिलती है ।

राजस्थान के राजगढ़ (चूरु) विकास खण्ड में लोकजुम्बिश परियोजना के तहत सहज शिक्षा कार्यक्रम में जब यह चुनौतीपूर्ण निर्णय लिया गया कि सहज शालाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा का भार पूर्णत: महिलाओं को सौंपा जाये तो पता नहीं कितनी आशंकाएं व अपेक्षाएं थी । पर यह आशंकायें तो अवश्य ही थीं कि क्या लोग अपनी बेटी-बहुओं को घर से बाहर प्रशिक्षण के लिए भेज देंगे ? क्या महिलाएं घर के काम के दबाव के चलते सहज शाला का कार्य ठीक तरह से कर पायेंगी ? क्या वर्तमान सामाजिक स्थिति को देखते हुए अपना स्थान पायेंगी ? इत्यादि । यह आशंकाएं इस प्रदेश के लिए, विशेषकर गांव के लिए, अत्यंत महत्वपूर्ण है । जहां आज भी महिला केवल घरेलू कामकाज, बच्चों के पालन-पोषण व अपने खेत तक सीमित है । किसी भी निर्णय में उसका योगदान नगण्य है । जहां समूचा जीवन इसी भय को पालने-पोषने में गुजर जाता है कि कहीं पिता, पति, सास, ससुर, भाई-भौजाई नाराज न हो जायें । जहां बहुए घूंघट की ओट से दुनियां देखती है । पर दूसरी ओर यह भी अपेक्षा रही कि जहां शिक्षा से वंचित 9-14 आयु वर्ग में 95% लड़कियों की संख्या है, वह बालिकाएं इन महिला शिक्षिकाओं के पास अपने को अधिक सुरक्षित महसूस करेंगी, अभिभावक निश्चिन्त रहेंगे, व नियमित शाला में आ पायेंगी, जिससे बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा।

पर इसे बदलते समय का झोंका कहें या लोक जुम्बिश कार्मिकों की विश्वसनीयता, आर्थिक दबाव कहें या स्वयं की ललक । कारण चाहे जो हो, महिला घर की चारदीवारी से निकली, घूंघट को थोड़ा ऊपर उठाया, और आयी राजगढ़ के दूर-दराज के गांवों से जयपुर के दिगन्तर प्रांगण में प्रशिक्षण प्राप्त करने। सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करके ये महिलायें वर्तमान में सहज शाला के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

लोकजुम्बिश परियोजना राजगढ़ के द्वारा लिया गया यह निर्णय अवश्य ही महत्वपूर्ण है पर साथ ही खड़ी हो रही हैं कई प्रकार की चुनौतियां व समस्यायें ।

विकासखण्ड राजगढ़ में सहज शिक्षा कार्यक्रम नवम्बर, 1996 से शुरू हुआ । इन सहज शालाओं की शिक्षिकाओं में जहां पहले एक उत्साह था, जोश था, कुछ कर दिखाने की ललक थी, अब उन्ही उत्साह, जोश, उमंग व प्रेरणा की चिंगारियों पर ठण्डे छींटे पड़ने शुरू हो गये । इनमें से कुछ चिंगारियां बुझ गई और कई अभी तक अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए जूझ रही हैं। इनकी चुनौतियां-समस्याओं पर गौर करने से पहले राजगढ़ क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर एक नजर ।

सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति

राजगढ़ चूरु जिले की पूर्व दिशा में स्थित है । भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र मरुस्थल में आता है । इसकी सीमा दक्षिण में झुन्झनू से लगी हुई, तो उत्तर में हनुमानगढ़ जिले से । पूर्व में यह हरियाणा राज्य से लगा हुआ है । इस विकास खण्ड में ज्यादातर जाट जाति का बाहुल्य है । इसके अतिरिक्त बैरवा, हरिजन व धानक जाति के लोग भी यहां रहते हैं, जो अनुसूचित जाति में आते हैं । छुआछूत की स्थिति मुझे इस क्षेत्र में कम ही लगी । किसी भी हरिजन जाति की महिला का पानी या

चाय जाट जाति की महिला बिना किसी हिचकिचाहट के पी लेती है ।

इस क्षेत्र की भाषा संस्कृति व रीति-रिवाज में हरियाणा का समावेश है । पहनावे में पुरुष धोती-कुर्ता या पायजामा कुर्ता व महिलायें ज्यादातर सलवार-कुर्ता पहनती हैं । यहां पर वे सभी त्यौहार मनाते हैं जो आम तौर पर राजस्थान में मनाते हैं । स्थानीय देवता के रूप में जाहरवीर गोगाजी को मानते हैं, जिसका मन्दिर ददरेवा में स्थित है ।

शिक्षा के प्रति यहां के लोगों में जागरुकता आयी है । बालिका शिक्षा को भी लोगों ने महत्व देना शुरू किया है । लोकजुम्बिश ने इसमें उत्प्रेरक का काम किया है ।

ये सभी महिलायें इसी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पली-बढ़ी हैं जो सहज शिक्षा में शिक्षिका के पद पर कार्य कर रही हैं, इनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि इस प्रकार है :

- ये सभी महिलायें उन गांवों की बहुएं हैं, जहां इन्हें सहज शाला चलानी है ।

- सभी महिलायें ग्रामीण परिवेश और कृषक परिवारों से हैं । जो घर, रसोई, पशुओं की देख-रेख से लेकर खेतों में कठिन परिश्रम करती हैं । इस बात से अनभिज्ञ कि समाज और परिवार का जो ढांचा और नींव है उसका 75% भार उनके मजबूत कंधों व हथेलियों पर टिका है ।

- सभी को ससुराल व पीहर पक्ष की दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है ।

- सभी महिलायें मातायें हैं । इस कारण बच्चों को पालने की जिम्मेदारी भी इन्हीं पर है ।

- सभी की आयु 18-30 वर्ष के बीच है ।

- अधिकतर की शिक्षा आठवीं-नवीं तक है, कुछ दसवीं व हायर सैक्रण्डरी भी है। अधिकतर को पढ़ाई छोड़े 8 से 10 वर्ष हो गये ।

- ये महिलायें तीन घण्टे सहज शाला पर काम करती हैं। समय निर्धारण बच्चों की सुविधानुसार है और बाकी समय में घर-परिवार को सम्हालना व खेती का काम करती है।

-इनकी सहज शालाओं में 9 से 14 आयु वर्ग के छात्र-छात्रायें आती हैं जिनमें अधिकांश लड़कियां हैं ।

- अधिकांश की आर्थिक स्थिति अच्छी है ।

उपरोक्त पृष्ठभूमि से यह अन्दाजा तो लग ही जाता है कि इन महिलाओं पर सहज शाला संचालन के अतिरिक्त और कितनी ढेर सारी जिम्मेदारियां है, जिनका निर्वाह इनको करना पड़ता है।

चयन-प्रक्रिया

लोक जुम्बिश शिक्षा में जनभागीदारी की बात करती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इनका प्रथम चयन गांव की चौपाल पर गांव वालों की राय से किया गया। इस दिन लोक जुम्बिश का कार्मिक भी उपस्थित था, जो शिक्षक के लिए उम्मीदवार महिलाओं की शैक्षणिक योग्यताओं की जांच करता है । एक से अधिक उम्मीदवार होने पर उस महिला का चयन किया जाता है जो शैक्षणिक योग्यता के साथ-साथ कार्य करने में रुचि रखती हो । प्रथम चयन प्रक्रिया पूरी होने पर खण्ड स्तरीय शिक्षा प्रबंधन समिति में उसके नाम का प्रस्ताव लाया गया । जिसके अनुमोदित होने पर, 15-20 महिलाओं को 40 दिवसीय प्रशिक्षण हेतु दिगन्तर जयपुर में भेजा गया। सफलता पूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने पर उनका अन्तिम चयन किया गया।

चुनौतियां व समस्यायें

राजगढ़ विकास खण्ड में जहां शैक्षिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से काफी सम्पन्नता है, वहां सहज शिक्षा कार्यक्रम में इन महिलाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती है अपने-आपको शिक्षिका के रूप में स्थापित करना । जब ये महिलायें समुदाय सम्पर्क के लिए जाती हैं (जो कि प्राथमिक शिक्षा में महत्वपूर्ण चीज है) तो घर वालों द्वारा इसके लिए मना किया जाता है। समुदाय के लोग इनकी चर्चा करते हैं । जिस बच्ची के घर सम्पर्क करती हैं उसके घरवालों द्वारा तिरस्कृत किया जाता है। यहां तक कह दिया जाता है कि ''यह क्या मांगने आयी है, इसको डाल दो ।''

शिक्षिका यदि ठीक से काम करें तो 4-5 घण्टे खर्च होते हैं, ऐसी स्थिति में महिलायें घर की जिम्मेदारी ठीक तरह से नहीं निभा सकती । अत: ससुर, सास व पति का यह दबाव होता है कि तुम काम छोड़ दो । दूसरी ओर पीहर पक्ष की मुलाकातें कम होने के कारण वह भी ससुराल पक्ष के सुर में सुर मिलाते हैं ।

लोकजुम्बिश द्वारा इनका मानदेय मात्र 400 रुपये निर्धारित है, जो कि आज के अर्थयुग में नगण्य है । अत: इनको कोई विशेष आर्थिक्र लाभ भी नहीं है, जिससे घरवालों को संतुष्ट किया जा सके ।

अधिकतर महिलाएं आठवीं-नवीं तकशिक्षित हैं तथा पढ़ाई छोड़े काफी समय हो चुका, घर-परिवार की जिम्मेदारियां ज्यादा हैं, पठन-पाठन कार्य से दूर हैं, अत: इनका भाषा व गणित का शैक्षणिक स्तर काफी कमजोर है ।

ऐसी स्थिति में जो महिला शिक्षक इन दबावों के चलते टूट गई है , उसने या तो काम करना छोड़ दिया है या शाला के कार्य में लापरवाही बरतना शुरु कर दिया ।

इन उपरोक्त चुनौतियों व समस्याओं के लिए मैंने लोक जुम्बिश कार्मिकों के साथ बैठकर विचार-विमर्श किया । इसमें शैक्षणिक योग्यता बढ़ाने के लिए तो स्वयं शिक्षिका को प्रेरित किया गया तथा उसकी शैक्षणिक समस्या को साप्ताहिक बैठकों व प्रशिक्षणों में दूर करने का प्रयास किया । यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है, जिसमें आंशिक सफलता मिली है ।

पारिवारिक दबाव को कुछ कम करने के लिए लोक जुम्बिश कार्मिक उनके परिवार वालों से निरन्तर सम्पर्क में हैं, और उनके घरवालों व गांव वालों को यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है कि यह जो महिला काम कर रही है उसका चयन आप लोगों ने किया है । अत: इसको एक शिक्षिका मानकर सम्मान दें और अपेक्षित सहयोग करें, तब ही यह खुल कर काम कर पायेगी। एक-दो गांवों में इसके अच्छे परिणाम भी आये हैं ।

सबसे बड़ी जो चुनौती थी, अपने आपको शिक्षिका के रूप में स्थापित करना । इसका निराकरण इस सफलता से होने की संभावना है कि मई, 98 में इस कार्यक्रम से 18 बच्चियों ने प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ली है । ये बच्चियां कक्षा 5 की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करके कक्षा 6 में प्रवेश ले चुकी हैं । लोक जुम्बिश द्वारा लोगों में इस बात का विश्वास पैदा किया जा रहा है, कि इन शिक्षिकाओं को यदि सम्मान दिया जाये, अपेक्षित सहयोग प्रदान करें, तो इनकी सहज शालाओं में पढ़ने वाले बच्चे, औपचारिक विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों से कमतर नहीं हैं। शिक्षिकायें भी ऐसे प्रयासों में संलग्न हैं।

स्वयं महिलाओं में बदलाव

विकास खण्ड राजगढ़ में नवम्बर, 96 से सहज शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । इसमें काम करने वाली महिलाओं में मुझे कुछ परिवर्तन लगे । पहले ये महिलायें खुलकर अपनी बात नहीं कहती थीं । पर अब ये अपनी बात बेझिझक कहने लगी । पहले अपने गांव से किसी शहर में आने से कुछ डरती थीं, पर अब ये महिलायें अपने गांव से राजगढ़ बिना किसी झिझक के अकेली आती हैं । यह तो सब छोटे-मोटे बदलाव हैं, मुझे जो बड़ा बदलाव लगा वह है गांव के मंच पर (जहां पर गांव के सभी लोग व सरकारी अधिकारी भी मौजूद हों) बालिका शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त करना । ऐसा किया गांव मून्दीलाल की शिक्षिका ने साक्षरता कार्यक्रम के आयोजन पर । इस पर गांव वालों की प्रतिक्रिया दोनों ही तरह की रही। ऐसे उदाहरण स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस के मौके पर भी आये हैं ।

गांव वालों की सोच में बदलाव

इस बारे में मैं ज्यादा कुछ नहीं कह सकता परन्तु कुछ गांवों में इन महिला शिक्षिकाओं के प्रति सोच में बदलाव आया है । लोग इनके ऊपर विश्वास करके अपनी लड़कियों (केन्द्र पर पढ़ने वाली बालिकायें) को इनके साथ एक दूसरे गांव भेज देते हैं । इनकी शालाओं को शिक्षा केन्द्र के रूप में मान्यता देने लगे हैं । गांव की महिलायें भी बातचीत में इनको ''मास्टरनी'' शब्द से संबोधित करने लगी हैं । गांव की शिक्षा संबंधी बैठक में इनकी उपस्थिति को लोग आवश्यक मानने लगे हैं। पर ऐसा अभी तक कुछ गांवों में ही हो रहा है, जो कि यथेष्ठ नहीं है। अभी इस ओर और प्रयास करने की आवश्यकता है ।

मैंने सहज शिक्षा कार्यक्रम राजगढ़ में 2 वर्ष (अक्टूबर, 96 से सितम्बर, 98 तक) काम किया है । अवलोकन के दौरान देखने को आया कि इन पर किस प्रकार के पारिवारिक व सामाजिक दबाव व उत्तरदायित्व है, जिनको सहन करती हुई ये काम कर रही हैं । इनके कुछ उदाहरण यहां दिये जा रहे हैं।

1 बासभरिण्ड

(समय 9 से 12)

सहज शाला बास भरिण्ड पर मैं प्रात: 10 बजे पहुंचा । शिक्षिका बच्चों के साथ शिक्षण का कार्य कर रही थी । बच्चे अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे थे, पर शिक्षिका उदास थी। मैंने उदासी का कारण पूछा तो उसने पेट में दर्द होना बताया। शाला समय समाप्त होने के बाद मैं उसके साथ उसके घर गया। उसकी सास मुझे देखते ही मेरे ऊपर बिफर पड़ी और बोलने लगी - भैंस भूखी बंधी है, मटके खाली पड़े हैं, मुझे बुखार आ रहा है, सरसों खेत में सूख रही है, लड़की बीमार है । बच्चे के पेट में दर्द हो रहा है । तुम्हें तुम्हारी स्कूल की पड़ी है । घर में हम दो ही हैं और तीन बच्चे हैं। मैंने इससे कहा कि आज तू स्कूल मत लगा पर मानी नहीं । यह पूरा

संवाद हरियाणवीं में था । इन सब परिस्थितियों के बावजूद भी वह शिक्षिका नियमित स्कूल लगाती रही । इसके स्कूल से मई, 98 में 5 बच्चों ने प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ली। 4 लड़कियां ससुराल चली गई और 5 को औपचारिक विद्यालय की कक्षा 3-4 में दाखिला दिया । वर्तमान में यह स्वयं प्रवर्तक का काम सम्हाल रही है जिसके अन्तर्गत ददरेवा संकुल की 10 सहज शालाओं में अकादमिक मदद पहुंचाना, शिक्षिकाओं की शेयरींग बैठक आयोजित करना, 10 दिवसीय प्रशिक्षणों में प्रशिक्षक के रूप में भाग लेना, मुख्य कार्य है । इनके अतिरिक्त लोक जुम्बिश कार्मिक होने के नाते लोक जुम्बिश की अन्य गतिविधियों में भी मदद करती है ।

2. ढाणी बड़ी

ढाणी बड़ी सहज शाला की शिक्षिका को लड़कियों के परीक्षा पूर्व शिविर में भाग लेना था । मुझे सूचना मिली कि वह नहीं आ रही है। मैं 25 फरवरी को उसके गांव गया । वहां पर उसका पति, देवर व ससुर तीनों मिले । मैंने बात शुरू कि तो उन्होंने बताया कि दो भैंसे दूध देती हैं, उनका दूध कौन निकालेगा? इस क्षेत्र में भैंसों का दूध अधिकतर महिलायें ही निकालती हैं। खेत में चने की कटाई चल रही है, 100 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से भी मजदूर नहीं मिल रहे हैं। अत: इसका शिविर में जाना असंभव है । मैंने खूब बात की पर वह तैयार नहीं हुए । अन्त में शिक्षिका ने ही अपने स्तर पर घरवालों को समझाया तथा 20 दिन के लिए अपनी ननद को बुलाया । तब जाकर वह शिविर में भाग ले सकी । शिविर की अवधि के दौरान भतीजी की शादी हुई जिसमें उसको जाना पड़ा।

3. कालरी

(समय 10 से 1)

मैं अवलोकन के लिए गया तो कालरी के सहज शिक्षा केन्द्र पर मात्र 5 बच्चे उपस्थित थे । एक बजे बाद बातचीत की योजना-रिकार्डिंग समझायी, 3-4 बच्चों के घर पर सम्पर्क किया। इतने में बज गये 2.30 । जब हम दोनों उसके घर की तरफ जा रहे थे, तो रास्ते में उसका पति गुस्से से लाल-पीला होता मिला। मेरे से उसने कुछ नहीं कहा पर शिक्षिका पर बरस पड़ा । कहने लगा, ''तेरा समय अब हुआ है, क्या 200 रुपये में खरीद लिया है ? नहीं चाहिये हमें ऐसा काम । घर-घर भटकने के लिए तू ही मिली है, इनको ?'' गुस्से का कारण था, उस दिन उनके परिवार में शादी थी, किसी रस्म के लिए घर पर औरतें उसका इन्तजार कर रही थीं। बाद में मैंने उनसे बातचीत और समझाने का प्रयास किया तो आरोप था कि यह रोज ही दो-तीन बजे तक घर आती है । वैसे वह बाद में समझ गया था ।

4. चिमनपुरा

(समय 10 से 1)

मैं चिमनपुरा सहज शिक्षा केन्द्र पर 24 नवम्बर, 97 को अवलोकन के लिए 10.30 पर पहुंचा । शाला बन्द मिली । मैं शिक्षिका के घर पर गया, जहां पर उसका ससुर मिला । उसने बताया कि लक्ष्मी की भाभी प्रसव पीड़ा में है, जिसको जयपुर ले गये हैं । परिवार में और समझदार महिला होने के कारण उसको साथ जाना पड़ा । वैसे यह शिक्षिका अच्छी शिक्षिकाओं में से एक है ।

5. बीरभी खालसा

यह शाला सिद्धमुख संकुल के अन्तर्गत आने के कारण यहां की शिक्षिका की पाक्षिक बैठक सिद्धमुख ही होती है जो लगभग 50-55 किलोमीटर दूर पड़ता है । सिद्धमुख से बीरभी पहुंचने के लिए राजगढ़ वाली बस में बैठकर मांगला उतरना पड़ता है, वहां से बीरभी के लिए बस मिलती है । आखरी बस 5 बजे मिलती है । एक बैठक में बस व्यवस्था गड़बड़ाने के कारण इसकी 5 बजे वाली बस छूट गई । इस स्थिति में यह शिक्षिका दूसरी शिक्षिका के साथ राजगढ़ उसके मायके में चली गई । जब निर्धारित समय पर यह घर नहीं पहुंची तो घरवाले जीप लेकर सिद्धमुख व राजगढ़ ढूंढते रहे । दूसरे दिन जब यह शिक्षिका अपने गांव (ससुराल) पहुंची तो घरवालों ने उसे काम करने से (शाला संचालन के कार्य के लिए) मना कर दिया । संकुल कार्मिक व मैंने उन्हें समझाया और आगे से ऐसी स्थिति होने पर उन्हें सूचित करने या किसी भी व्यवस्था से घर पहुंचाने की बात कही, तब जाकर वे तैयार हुए ।

इस प्रकार की समस्यायें इन महिलाओं के साथ आती रही हैं और शायद आगे भी आयेंगी, जिससे जूझते हुए यह काम कर रही हैं । ◆